सल्तनतकालीन इतिहास लेखन पद्धति

डॉ0 राधागोविन्द सिंह

डिम्पल कुमारी

प्राचीन भारतीयों की इतिहास लेखन में कोई रूचि नहीं थी। उनके विद्वान धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक अध्ययनों पर अधिक ध्यान देते थे। भारतीय इतिहास–लेखन वस्तुतः एक इस्लामी विरासत है। मुसलमान उलेमा तथा इतिहासकारों ने ही इतिहास के प्रति जागरूता दिखाई एवं दिन प्रतिदिन की घटनाओं तथा राजनीतिक हलचलों का विस्तृत वर्णन लिखा। ऐसा करने में वस्तुतः उनका प्राथमिक उद्देश्य इस्लाम का गौरव कायम करना था। वे किसी अमरी उल मोमनीन के सैन्य कारामातों पर गर्व का अनुभव करते थे, जो काफिरों को इस्लाम में धर्मांतरित कर 'दारूल हरब' को 'दारूल इस्लाम' में परिवर्तित करने का प्रयास करता था। वे इसी दुनिया के व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी भौतिक सम्पत्तियों को महत्ता दी एवं अपने सांसारिक लाभों को बढ़ाने का कठोर प्रयत्न किया। उनकी इस सज वृत्ति ने ही उन्हें अपेन भूत तथा वर्तमान के घटनाक्रमों को लिपिबद्ध करने में सहायता दी।

मुस्लिम इतिहास–लेखकों, राजनामचा रखने वालों एवं दरबारी इतिहासकारों को नियुक्त करते थे जो उनेक क्रियाकलापों का विपुल हिसाब–किताब प्रायः अतिश्योक्तिपूर्ण होता था। इस्लामी जगत के वंशानुगत, क्षेत्रीय या सामान्य इतिहासों पर विद्वानों ने पुस्तकें लिखीं तथा कवियों ने मसनवी बनाये। लेखकों ने बड़े तथा छोटे लोगों की जीवन संबंधी बातों का वर्णन किाय एवं ऐतिहासिक उपाख्यानों तथा निजी अथवा सार्वजनिक घटनाक्रमों का विवरण दिया। उन्होंने केवल साहित्यिक प्रसिद्धि, पुरस्कार या अपने संरक्षकों के मानसिक उन्नति के लिए ही नहीं, अपितु अपनी बौद्धिक क्षुधा एवं अपने अवलोकनों एवं अनुभवों को लिखने की अपनी आन्तरिक ललक को संतुष्ट करने के लिए भी लिखा।